दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

दिनांक : 10.09.2025

प्रकाशनार्थ

दिनांक 10.09.2025 गोरखपुर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 56वीं तथा राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महराज की 11वीं पुण्यतिथि के अवसर पर दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय, गोरखपुर में श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नैमिषारण्य के स्वामी विद्या चैतन्य जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि महंत दिग्विजयनाथ जी महराज एवं पूज्य अवेद्यनाथ जी महाराज बहुत ही लोकप्रिय एवं जनप्रिय संत थे। दिग्विजयनाथ जी महराज ने अपने कार्यो एवं प्रेरणा से समाज को जागरूक कर स्वतंत्रता हेतु प्रेरित किया। वहीं महंत अवेद्यनाथ जी महराज ने सामाजिक समरसता को स्थापित करने तथा रामजन्म भूमि के आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। महंत अवेद्यनाथ जी ने अयोध्या में राम मन्दिर के निर्माण हेतु सबसे अग्रणी भूमिका का निर्वाह किया था।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री पृथ्वी राज सिंह पूर्व प्रान्त संचालक, गोरक्षप्रान्त, राष्ट्रीय स्वंय सेवक संघ ने कहा कि महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज और महंत अवेद्यनाथ जी महाराज ने राष्ट्र एवं समाज के उत्थान में बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। गोरखनाथ मन्दिर सामाजिक समरसता को स्थापित करने में सबसे अग्रणी भूमिका में रहा है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीयता और हिन्दुत्व एक दूसरे के पर्यायवाची है। साथ ही भारत ज्ञान एवं शांति के मार्ग पर चलते हुए पूरी दुनियॉ को नेतृत्व प्रदान करने की क्षमता रखता है। ऐसी क्षमता दुनियॉ के किसी भी राष्ट्र के पास नहीं है। प्राचीन काल में भारत ने अपनी इस क्षमता से सम्पूर्ण विश्व को प्रकाशित किया था और आने वाले समय में भी वह इस कार्य को सहजता पूर्व कर लेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि किसी संस्था एवं समाज के लिए यह आवश्यक होता है कि जिन व्यक्तियों ने समाज के विकास में अपना योगदान दिया है उनके प्रति हम कृतज्ञता का भाव अर्पित करें। आज यह कार्यक्रम इन्ही संतो के प्रति कृतज्ञता अर्पित करने हेतु आयोजित किया गया है। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज राज परिवार से होते हुए अपने जीवन को समाज तथा गोरखनाथ मन्दिर के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से भारत की पराधीनता की बेड़ियों को तोड़ने का कार्य किया। दिग्विजयनाथ जी महाराज यह जानते थे कि इस क्षेत्र में सामाजिक क्रांति हेतु शिक्षा को ही हथियार के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। उन्होंने ही महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद की नीव डाली जो इस क्षेत्र में शिक्षा के प्रकाश को फैला रहा है।

कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन डॉ. शुभ्रांशु शेखर सिंह, सहायक आचार्य रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग ने किया तथा आभार ज्ञापन हिन्दी विभाग के प्रभारी प्रो. नित्यानन्द श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर डॉ. निधि राय, इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. त्रिभुवन मिश्रा, डॉ. अंशुमान सिंह, डॉ. श्याम सिंह, डॉ. शैलेश सिंह, सुश्री श्वेता सिंह, श्री नवीन सिंह तथा तकनीकी सहायक के रूप में विकास पाठक तथा छात्र–छात्राएं उपस्थित रहे।

(डॉ.) शैलेश कुमार सिंह
प्रभारी, सूचना एवं जनसम्पर्क